अति-गर्व से बचें

हमारे प्रभु यीशु मसीह के नाम की महिमा हो।
आइए, हम मिलकर बाइबल का अध्ययन करें।

परमेश्वर का वचन कहता है:

रोमियों 12:3
“क्योंकि मुझे दी गई अनुग्रह के कारण मैं तुममें से हर एक से कहता हूँ कि अपने विषय में औचित्य से बढ़कर मत सोचना, परन्तु वही समझो जो संयम से सोचना चाहिए; जैसा कि परमेश्वर ने प्रत्येक को विश्वास का मात्रादान किया है।”

तो यहाँ बताए गए “अपने को बढ़ा-चढ़ाकर समझने” का अर्थ क्या है?

यदि हम आगे के पदों को पढ़ते हैं, तो उत्तर स्पष्ट हो जाता है:

रोमियों 12:4–8
“क्योंकि जैसे एक देह में बहुत से अंग हैं, और सब अंगों का एक ही कार्य नहीं है,
वैसे ही हम भी जो बहुत हैं, मसीह में एक ही देह हैं, और आपस में एक दूसरे के अंग हैं।

और हमारे पास दिए गए अनुग्रह के अनुसार भिन्न-भिन्न वरदान हैं: यदि किसी में भविष्यवाणी का वरदान है, तो वह विश्वास के अनुसार भविष्यवाणी करे;
यदि सेवा का वरदान है, तो सेवा करे; यदि किसी का उपदेश देने का, तो वह उपदेश दे;
जो समझाता है, वह समझाए; जो दान देता है, वह सरलता से दे; जो अगुवाई करता है, वह लगन से करे; जो दया करता है, वह आनन्द से करे।”

क्या तुमने देखा?
इसका अर्थ यह है कि अपने मन में यह न सोचो कि तुम्हारे पास सभी वरदान हो सकते हैं या तुम्हें बहुत-से वरदान होने ही चाहिए।

उदाहरण के लिए, कोई व्यक्ति चाहता है कि वही पास्टर भी बने, वही भविष्यद्वक्ता भी, वही शिक्षक भी, वही प्रेरित भी और वही सुसमाचार प्रचारक भी।
संक्षेप में, वह सोचता है कि सभी आत्मिक वरदान उसी के पास हैं। वह यह नहीं मान सकता कि वह केवल एक ही वरदान वाला सेवक हो सकता है — जैसे केवल प्रचारक होना उसे पर्याप्त नहीं लगता; वह चाहता है कि वह भविष्यद्वक्ता भी कहलाए।
एक शिक्षक सोचता है कि वह “महा-भविष्यद्वक्ता” भी है।
एक प्रेरित चाहता है कि वह “प्रधान भविष्यद्वक्ता” भी माना जाए।

आदि।

यही वे बातें हैं जिनसे बाइबल हमें सचेत करती है —
हमें अपने आप को जितना सोचना चाहिए, उससे अधिक नहीं समझना चाहिए।

अहंकार की आत्मा मन में नम्रता को नष्ट कर देती है, और अन्त में परमेश्वर की उपस्थिति को मनुष्य के जीवन से दूर कर देती है।

1 पतरस 5:5
“क्योंकि परमेश्वर घमण्डियों का विरोध करता है, परन्तु दीनों को अनुग्रह देता है।”

हमें दिए गए वरदान न तो प्रतियोगिता के लिए हैं और न ही यह दिखाने के लिए कि कौन सबसे बड़ा है, या किसके पास अधिक ‘अभिषेक’ है।
जो वरदान स्वयं को ऊँचा दिखाने या दूसरों से तुलना करने के लिए उपयोग किए जाते हैं, वे पहले ही शैतान द्वारा भ्रष्ट किए जा चुके हैं।
वरदान हमें इसलिए दिए गए हैं कि हम एक-दूसरे की सेवा करें, पवित्र लोगों को सिद्ध करें, और मसीह की देह का निर्माण हो।

इफिसियों 4:11–12

“और उसी ने कितनों को प्रेरित, कितनों को भविष्यद्वक्ता, कितनों को सुसमाचार सुनाने वाले, और कितनों को पास्टर तथा शिक्षक नियुक्त किया,
जिससे पवित्र लोग सेवा-कार्य के लिए योग्य बनें और मसीह की देह का निर्माण हो।”

प्रभु हमारी सहायता करे।

यदि तुमने अभी तक मसीह को ग्रहण नहीं किया है, तो जान लो कि अनुग्रह का द्वार अभी खुला है—परन्तु यह सदा खुला नहीं रहेगा। आज ही मन फिराओ और अपना जीवन उसे सौंप दो, क्योंकि इस पृथ्वी पर हमारा समय बहुत कम है।
किसी भी क्षण अन्तिम तुरही बज सकती है, और मसीह अपनी कलीसिया को उठा ले जाएगा। उसके बाद पृथ्वी पर केवल न्याय रहेगा।
तो न तुम और न मैं—हम किसी भी तरह परमेश्वर के इस न्याय में गिरने वालों में शामिल न हों।

याद रखो: नरक वास्तविक है—और स्वर्ग भी वास्तविक है।
और जीवन या मृत्यु का चुनाव इसी पृथ्वी पर किया जाता है। मृत्यु के बाद कोई चुनाव का अवसर नहीं है।
इसलिए, अपने जीवन के समाप्त होने से पहले ही सही निर्णय अभी कर

लो।

मरनाता।

इन शुभ समाचारों को दूसरों के साथ साझा अवश्य करें। और यदि आप चाहते हैं कि हम आपको नियमित रूप से ईमेल या व्हाट्सऐप पर परमेश्वर के वचन की शिक्षा भेजें,
तो इस नंबर पर संदेश भेजें: +255 789001312

Share on:
WhatsApp